स्टार समाचार, भोपाल
30 JAN 2015

गांधी चंदन, गीता सुवास

गांधी जी के सहादसत दिवस के अवसर पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान गांधीजी को अपनी श्रद्धांजलि देते ब्लॉग पर एक पोस्ट लिखी।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन ने महात्मा गांधी के बारे में कहा था कि आने वाली पीढ़ियां शायद यह विश्वास नहीं कर पाएंगी कि इस तरह का कोई हाड़-मांस का व्यक्ति इस पृथ्वी ग्रह पर रहा होगा। महात्मा गांधी थे ही ऐसे। उनकी महानता को भारत ही नहीं पूरे विश्व में माना जाता है। विश्व के महापुरुषों ने महात्मा गांधी की प्रशंसा में इसी तरह की बातें कही हैं। मार्टिन लूथर किंग ने कहा था कि गांधी इतिहास के सम्भवतः पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने ईसा की प्रेम धारणाओं को व्यक्तियों के परस्पर संबंधों से उठाकर बड़े पैमाने पर एक प्रभावकारी शक्ति बना दिया। बेंथम और मिल, मार्क्स और लेनिन तथा हाब्स, रूसो और नीत्से से मुझे जो संतोष प्राप्त नहीं हुआ, वह गांधी से प्राप्त हुआ।

महात्मा गांधी को महान बनाने में श्रीमद्भगवद गीता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। महात्मा गांधी ने सभी धर्मों के ग्रंथों का गहन अनुशीलन किया और सबकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारा, परंतु गीताजी को वे अपनी मां और जीवन का संदर्भ-ग्रंथ मानते थे। गीता पाठ उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था। गांधीजी धर्म-ग्रंथों को जानने और मानने से अधिक जीवन में उतारने पर विश्वास करते थे। उन्होंने ग्रंथों की शिक्षाओं को जीवन में उतारकर यह सिद्ध कर दिया कि साधारण व्यक्ति भी आचरण के बल पर महापुरुष बन सकता है। महात्मा गांधी मानते थे कि मनुष्य में सुप्त दैविक सम्पदाओं को सत्यनिष्ठता की साधना से जगाकर उसे जीवन को सच्चे अर्थों में इसकी परिपूर्णता में जीने के योग्य बनाया जा सकता है।

इसके माध्यम से मनुष्य देवत्व को प्राप्त हो सकता है। महात्मा गांधी गीता की स्थितप्रज्ञ की अवधारणा से सबसे अधिक प्रभावित थे। स्थितप्रज्ञ व्यक्ति हर्ष की स्थिति में हर्षित नहीं होता और दुःख की स्थिति में दुःखी नहीं होता। वह हार-जीत, मान-अपमान, सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि आदि किसी भी स्थिति में अपने चित्त को सम रखता है।

महात्मा गांधी ने राजनीति को नई परिभाषा दी। उन्होंने इसे आध्यात्म से जोड़कर जन-कल्याण के साथ-साथ आत्म-शुद्धि तथा आत्म-कल्याण का साधन बना लिया। उन्होंने स्वयं लिखा है कि मेरा चरम ध्येय आत्मा का मोक्ष है। मेरी देश-सेवा उसी मोक्ष की साधना है।

महात्मा गांधी बाहर और भीतर की शुद्धि और स्वच्छता पर विशेष रूप से जोर देते थे। उन्होंने भारत में स्वच्छता को बढ़ाने का आह्वान किया। उनकी इसी भावना को मूर्त रूप देते हुए हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की है। हर एक भारतीय अपने घर, गली, आंगन, गांव और शहर को स्वच्छ रखने में सक्रिय भागीदारी करें, यह भी महात्मा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मेरी मान्यता है कि हरेक व्यक्ति को गीताजी का अध्ययन करना चाहिए। यह ग्रंथ किसी व्यक्ति, धर्म या समुदाय विशेष के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक मानव के लिए है। गांधीजी पर गीता के गहरे प्रभाव को देखते हुए हम कह सकते हैं कि गांधीजी अगर चंदन हैं, तो गीता उसकी सुवास। महात्मा गांधी की पुण्य-तिथि पर उन्हें कोटि-कोटि नमन।

आपका, शिवराज